पतंजलि योग समिति

संक्षिप्त दर्शन एवं सिद्धान्त

(1) राष्ट्रवाद

राष्ट्रवाद के सप्त-सिद्धान्त

राष्ट्रवादिता, पराक्रमशीलता, दूरदर्शिता, पारदर्शिता, मानवतावाद, अध्यात्मवाद व विनयशीलता ये सप्त–सिद्धान्त हमारे वैयक्तिक व राष्ट्रीय जीवन के मूलभूत सिद्धान्त एवं आदर्श हैं। सप्त–सिद्धान्त हमारे स्वधर्म, राष्ट्रधर्म व हमारी कार्यपद्धति के मूल–मंत्र हैं। सप्त–सिद्धान्त हमारे देश के नागरिक व नेतृत्व की मुख्य कसौटी हैं। अर्थात् इन सप्त–सिद्धान्तों का पूर्णतः पालन करने वाला व्यक्ति ही इस देश का सच्चा नागरिक है। इन सप्त–सिद्धान्तों के अनुरूप जीवन जीने वाला व्यक्ति ही इस राष्ट्र को सही नेतृत्व दे सकता है। इन्हीं सप्त–सिद्धान्त पर चलकर हम वैयक्तिक व राष्ट्रीय जीवन में एक नई क्रान्ति व नई आजादी लाना चाहते हैं और राष्ट्र में एक आदर्श व्यवस्था स्थापित कर भारत को फिर से विश्व गुरु बनाना चाहते हैं। इन्हीं सप्त–सिद्धान्तों पर चलकर हम भारत को विश्व की महाशक्ति बनाएंगे। भारत आध्यात्मिक, नैतिक व सामाजिक दृष्टि से विश्व का नेतृत्व करेगा और पूरे विश्व में सुख, समृद्धि, शान्ति व समरसता के एक नए युग का सूत्रपात होगा। हम चाहते हैं कि देश के नागरिक एवं देश का नेतृत्व इन राष्ट्रवाद के सप्त सिद्धान्तों के अनुकूल आचरण करें।

1. राष्ट्रवादी

जो राष्ट्र को अपने जीवन में सदा सबसे ऊँचे स्थान पर रखता हो, वह राष्ट्रवादी है। धर्म में सबसे पहले राष्ट्रधर्म, उसके बाद अपना वैयक्तिक धर्म–हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि धर्म, देवों में प्रथम देवता राष्ट्रदेव को जो मानता हो, वह राष्ट्रवादी है। वैयक्तिक, पारिवारिक व आर्थिक हितों में प्रथम राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानना, प्रेम में सबसे प्रथम राष्ट्रप्रेम, जीवन में एवं जगत में भी उससे ही प्रेम करना, जो देश से प्रेम करे। जो देश से प्रेम नहीं करे, उससे प्रेम नहीं करना। पूजा–भक्ति में प्रथम पूजा–भक्ति राष्ट्र की, उसके बाद ईश–भक्ति, मातृ–पितृ भक्ति व गुरुभक्ति आदि को मानना। वन्दना में प्रथम राष्ट्रवन्दना, ध्यान में प्रथम देश का ध्यान, चिन्तन व चिन्ता में भी प्रथम राष्ट्र का चिन्तन व राष्ट्र की चिन्ता, काम में प्रथम देश का काम, अभिमान में जो प्रथम स्वदेश का स्वाभिमान करे, वह राष्ट्रवादी है। रिश्तों में प्रथम रिश्ता व नाता देश का, यदि कोई रिश्तेदार भी देश से प्यार नहीं करे तो उससे भी कोई रिश्ता–नाता नहीं रखना। स्वच्छता व स्वस्थता में भी प्रथम देश की स्वच्छता व स्वस्थता, समृद्धि में प्रथम देश की समृद्धि, विकास में भी प्रथम राष्ट्र के विकास का प्रयास जो करता है, वह राष्ट्रवादी है। देशों में जिसके हृदय–मन विचार एवं प्राणों व आचरण में प्रथम स्वदेश व स्वदेशी का भाव है, वह राष्ट्रवादी है। भाषाओं में जिसके जीवन, आचरण व व्यवहार में प्रथम राष्ट्रभाषा है, वह राष्ट्रवादी है। जो स्वदेशी शिक्षा, स्वदेश के संस्कार, स्वदेश की संस्कृति, योग, धर्म, दर्शन व अध्यात्म से प्यार करे, वह राष्ट्रवादी है। जो स्वस्थ, स्वच्छ, समृद्ध व संस्कारवान भारत बनाने के लिए एवं स्वदेशी से स्वावलम्बी राष्ट्र बनाने के लिए जो नियन्त्रित जनसंख्या के नियम से भूख, गरीबी, बेरोजगारी से मुक्त व सौ प्रतिशत अनिवार्य मतदान के विधान से देश की भ्रष्ट राजनैतिक व्यवस्था के समाधान के लिए प्रतिबद्ध है, वह राष्ट्रवादी है। जो स्वदेशी चिकित्सा पद्धतियाँ–योग, आयुर्वेद, यूनानी व सिद्धा आदि के पूर्ण विकास व इन पर अनुसंधान के लिए संकल्पित है, वह राष्ट्रवादी है। जो स्वदेशी ज्ञान अर्थात् वेद, दर्शन व उपनिषद् आदि से प्राप्त वैदिक स्वदेशी ज्ञान, स्वदेशी खान–पान, स्वदेशी वेशभूषा, स्वदेशी कृषि व स्वदेश की ऋषि–संस्कृति से प्यार करता है, वह राष्ट्रवादी

है। जो स्वदेशी खेल, स्वदेशी कला–संस्कृति एवं स्वदेश की प्राचीन भाषा संस्कृत एवं समस्त भारतीय भाषाओं एवं राष्ट्रभाषा से प्यार करता है व राष्ट्रभाषा को सर्वोच्च मानता है, वह राष्ट्रवादी है। मनोरंजन में भी जो मूल्यों, आदर्शों व परम्पराओं पर आधारित भारतीय मनोरंजन में विश्वास करता है, वह राष्ट्रवादी है। राष्ट्रवाद, राष्ट्रधर्म या राजनीति से हमारा अभिप्राय राष्ट्र की उन तमाम व्यवस्थाओं, नियम–कानूनों, आदर्श–मूल्यों व परम्पराओं से है, जिन पर चलकर देश में सुख, समृद्धि एवं खुशहाली आती है तथा देश निरन्तर विकास की दिशा में आगे बढ़ता है। हमारे राष्ट्रवाद या राष्ट्रधर्म के आदर्श हैं–मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम, योगेश्वर श्री कृष्ण, चन्द्रगुप्त, विक्रमादित्य, सम्राट अशोक, तिलक, गोखले, गांधी, नेताजी सुभाष व लौहपुरुष सरदार पटेल आदि।

जो शून्य तकनीकी से बनी विदेशी वस्तुएं अपने दैनिक जीवन में उपयोग नहीं करता, वह राष्ट्रवादी है।

2. पराक्रमी

जो राष्ट्रहित के निर्णय लेने में एक पल भी विलम्ब न करे और राष्ट्रहित में निर्णय लेने व उन निर्णयों के क्रियान्वयन में किसी से न डरे, जो भाग्यवादी न होकर पुरुषार्थवादी हो, जो अन्धविश्वासों में न फंसकर कर्म, श्रम, उद्यम, साहस, शौर्य व स्वाभिमान के साथ जीता हो, वह पराक्रमी होता है। जो समाज एवं राष्ट्रहित के काम को धीमी गति से न करके आक्रामक ढंग से करे, जो प्रत्येक पवित्र कार्य को संघर्ष, बाधाओं व निन्दाओं से विचलित न होकर तथा प्रलोभनों से बिना प्रभावित हुए सफलता तक पहुँचाकर ही विराम लेता हो, ऐसा व्यक्ति पराक्रमी होता है। जो कल करना हो उसको आज करने में विश्वास करता हो, जो यह मानता हो कि जो कार्य कल हो सकता है वह आज क्यों नहीं हो सकता और जो आज नहीं हुआ, हम कैसे सोचें कि वह कल हो जायेगा? जो अभी नहीं तो कभी नहीं, जो कभी थके नहीं, कभी रुके नहीं, जो आराम हराम है तथा कार्यान्तर ही विश्राम है की कार्य संस्कृति में विश्वास रखता हो, जो कर्म न करने की प्रवृत्ति को आसुरी संस्कृति मानता हो **"अकर्मा दस्युः"** (वेद) तथा **"कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेत् शतं समाः। एवं त्वयिनान्यथेतोस्ति न कर्म लिप्यते नरः।।"** (यजुर्वेद 40.2)। कर्म करते हुए सौ वर्ष तक जीओ, यही जीवन का एकमात्र श्रेष्ठ मार्ग है। कर्म ही धर्म है। **"स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दतिमानवः"** (गीता)। योगेश्वर श्री कृष्ण कहते हैं कि अपने कर्म से भगवान् की पूजा कर। काम ही पूजा है। **"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन"** को अपना आदर्श मानता हो, वह पराक्रमी है।

3. पारदर्शी

जिसका जीवन निश्कलंक, पवित्र व बेदाग हो, जिसका वैयक्तिक, पारिवारिक, व्यवसायिक व सामाजिक जीवन सप्त मर्यादाओं की कसौटी पर खरा उतरता हो, जो दोहरे चरित्र में न जीकर निर्दोष जीवन के प्रति प्रतिपल सजग रहता हो, वह व्यक्ति पारदर्शी है। जिसके बाह्य एवं आन्तरिक जीवन में विरोधाभास न होकर पूर्ण शुचिता हो, वह पारदर्शी है।

4. दूरदर्शी

जो जाति, प्रान्त, क्षेत्र, मजहब, मत, पंथ, संप्रदाय एवं भाषा आदि के आग्रह एवं संकीर्णताओं से ऊपर उठकर सब जातियों का सम्मान करे, अपने क्षेत्र व प्रान्त के विकास की भी बात करे, सभी मजहबों एवं समस्त भारतीय भाषाओं का भी सम्मान करे, परन्तु यह सब करता हुआ राष्ट्रहित को न भूले, सभी भारतीय भाषाओं एवं संवाद व सम्पर्क के लिए विदेशी भाषाओं का भी सम्मान करे परन्तु राष्ट्रभाषा हिन्दी को सबसे ऊपर रखे। राष्ट्रहित को सर्वोच्च स्थान पर रखने वाला दूरदर्शी है। देश में प्रान्तवाद, क्षेत्रवाद, मजहब एवं क्षेत्रीय भाषाओं का उन्माद पैदा करके देशवासियों में परस्पर घृणा व नफरत फैलाने वाला, अपने क्षणिक हितों के लिए देश में आग लगाने वाला व्यक्ति दूरदर्शी नहीं हो सकता। विदेशी भाषाओं का ज्ञान रखना उत्तम बात है क्योंकि संवाद, सम्पर्क, व्यापार व व्यवहार के लिए यह आवश्यक है परन्तु अन्य देश की भाषा का राष्ट्रभाषा के रूप में प्रयोग करना, यह घोर अपमान व शर्म की बात है। दुर्भाग्य से आज हमारे देश में अधिकांश नेतागण सड़क से संसद तक वोट मांगते हैं भारतीय भाषाओं में और संसद में बैठकर राज करते हैं अंग्रेजी में। अपने तुच्छ राजनैतिक स्वार्थों की परवाह किए बिना राष्ट्रहित को सर्वोपरि मान हम दूरदर्शी बनें, जिससे आने वाली पीढ़ियाँ हमें गर्व से अपने आदर्श एवं राष्ट्रपुरुष के रूप में याद करें।

5. मानवतावादी

हम हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई आदि होने से पहले एक इन्सान हैं और हम सबका पिता एक परमेश्वर है, चाहे हम उसको किसी भी नाम से पुकारें। भगवान् ने हमें इन्सान, मानव बनाकर दुनिया में भेजा है। अतः हमारा प्रथम व मूल धर्म मानव धर्म है। हम सबके हृदयों में प्रेम, करुणा, वात्सल्य, सत्य व अहिंसा आदि ईश्वर प्रदत्त स्वाभाविक गुण–धर्म हैं। अतः मानवता, सत्य, अहिंसा व प्रेम आदि हमारे मूल धर्म–तत्त्व हैं। बाहर के धर्म एवं मजहब आदि मानव धर्म के लिए व मानवता के लिए खतरा नहीं बनें, यह मानवतावाद है। इन्हीं मानवीय मूल्यों में विश्वास रखने वाला मानवतावादी है।

6. अध्यात्मवादी

जो सार्वभौमिक व वैज्ञानिक मूल्यों, आदर्शों एवं परम्पराओं को धर्म मानता हो। जो आस्तिक और धार्मिक तो हो परन्तु धर्मान्ध न हो। जो मनुष्य सहित समस्त प्राणियों एवं जड़–चेतन समस्त स्वरूपों में ईश्वर का मूर्त रूप देखता हो और अपने सम्पूर्ण जीवन को जीव व जगत की सेवा के लिए समर्पित कर जगत की पीड़ा हरता है, वह अध्यात्मवादी है। जो समस्त संकीर्णताओं से ऊपर उठकर मानव–मात्र से प्यार करे व पूरे विश्व को परिवार की तरह देखे। सदैव अपने हृदय में **"वसुदैव कुटुम्बकम्"** का भाव रखे, वह अध्यात्मवादी है। यह अध्यात्मवाद व राष्ट्रवाद परस्पर विरोधाभासी विचारधार नहीं है अपितु प्रत्येक देश एवं उस देश के नागरिकों की पूर्ण स्वतन्त्रता व आत्मसुरक्षा के साथ जीने के लिए दोंनों विचारधाराएँ समान रूप से आवश्यक हैं। सांसारिक व राष्ट्रीय व्यवस्था के अनुसार हम एक स्वतन्त्र देश के नागरिक हैं और अपने देश की आजादी, एकता–अखण्डता व सम्प्रभुता की रक्षा, यह हमारा राष्ट्रीय नैतिक दायित्व है। यह हमारा राष्ट्रधर्म है, साथ ही यदि हम विश्व–बन्धुत्व, वैश्विक शान्ति व सामाजिक समरसता की दृष्टि से देखें तो हम सब एक हैं एवं एक ईश्वर की संतान हैं। अतः हम सब ईश्वर पुत्र होने की दृष्टि से परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार हम सब भाई बहन है। यह हमारा आध्यात्मिक दर्शन व अध्यात्मवाद है। (इसकी पूरी व्याख्या अध्यात्मवाद के रूप में साथ संलग्न है)

7. विनयशील

जो सत्ता, सम्पत्ति, वैभव एवं ज्ञान के शीर्ष पर पहुँचकर भी सदा विनम्र भाव से दूसरों की सेवा करता हो और सदा यह विश्वास रखता हो कि यह जीवन एवं सम्पूर्ण जगत उस परमात्मा की कृति है। इस दृश्य जीवन और जगत का नियन्ता व मालिक एक अदृश्य सत्ता परमेश्वर है, मैं निमित्त मात्र हूँ, मुझे निमित्त बनाकर सभी कार्य भगवान् स्वयं ही कर रहे हैं। यह तन–मन–धन–जीवन भगवान् का है, इस भाव में जीने वाले व्यक्ति को कभी अपने कर्म व सत्ता का अहंकार नहीं होता, ऐसा व्यक्ति विनयशील होता है। हमें अपने जीवन को ऐसे ही जीना चाहिए और यही जीवन व जगत का सत्य है।

(2) अध्यात्मवाद

अध्यात्म, धर्म एवं संस्कृति का सार्वभौमिक व वैज्ञानिक स्वरूप

हमारे सभी साधक यम–नियम–आसन–प्राणायाम–प्रत्याहार–धारणा–ध्यान एवं समाधि, इस अष्टांग योग एवं सम्पूर्ण भारतीय धर्म, दर्शन, अध्यात्म एवं सांस्कृतिक परम्पराओं, ऋषि–मुनियों द्वारा प्रतिपादित जीवन मूल्यों व आदर्शों के प्रति पूर्ण निष्ठावान व प्रतिबद्ध हैं। हम महर्षि पतंजलि प्रतिपादित अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य व अपरिग्रह इन पांच नियमों तथा शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय व ईश्वर प्रणिधान इन पांच नियमों को सार्वभौमिक, वैज्ञानिक व वैश्विक धर्म, अध्यात्म व संस्कृति के रूप में स्वीकार कर मनसा, वाचा, कर्मणा इनका पालन करने के लिए संकल्पित हैं। यम–नियमों के विपरीत हिंसा, असत्य व चोरी आदि करना, कराना व अनुमोदन (समर्थन) करना पाप एवं अपराध समझते हैं। भारत एक बहु– आयामी सांस्कृतिक परम्पराओं का देश है। अतः विविध, धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक व साम्प्रदायिक परम्पराओं में जो भी सार्वभौमिक व वैज्ञानिक सत्य है, हम उन्हीं को धर्म मानते हैं। परन्तु धार्मिक व साम्प्रदायिक परम्पराओं में जो अन्धविश्वास, ढोंग, पाखण्ड, आडम्बर व अवैज्ञानिक बातें हैं हम उनमें विश्वास नहीं रखते, इसीलिए हम धार्मिक हैं, धर्मान्ध नहीं हैं। हम धर्म के प्रतीकात्मक

पक्ष के प्रचारक, उपासक या समर्थक न होकर धर्म को आचरण की श्रेष्ठता मानते हैं। हम अहिंसा, सत्य, प्रेम, करुणा, सेवा, धृति, क्षमा, शुचिता व संतोष आदि जीवन–मूल्यों को धर्म मानते हैं। सब वेद–शास्त्र, कुरान, बाइबिल व गुरुग्रन्थ साहिब आदि पवित्र ग्रन्थों में भी अहिंसा व सत्य आदि मूल्यों को ही धर्म कहा है। हमारी वैयक्तिक आस्थाएँ चाहे किसी भी धर्म, मजहब, मत, पंथ व सम्प्रदाय आदि के साथ जुड़ी हों परन्तु संस्थागत रूप से व राष्ट्रीय संदर्भ में हम विविध देवों की उपासना में विभाजित न होकर सब देवों के देव ब्रह्मदेव की अर्थात् एक ईश्वर की उपासना में विश्वास रखते हैं। हम नास्तिक नहीं, हम आस्तिक हैं। परमात्मा के हिन्दी, संस्कृत, पंजाबी, अरबी व अंग्रेजी आदि अनेक भाषाओं में अनेक नाम हैं। इन सब नामों में हम ओंकार नाम से भगवान् का सम्बोधन इसलिए करते हैं क्योंकि यह सृष्टि का सबसे पुरातन व वैज्ञानिक शब्द है। यह शब्द भी सार्वभौमिक व वैज्ञानिक है। समस्त भारतीय दर्शन व अन्य देशों की संस्कृति में भी किसी न किसी रूप में ओ३म्, आमीन, ओमेन आदि रूपों में ओ३म् का समावेश है। ओ३म् के उच्चारण के वैज्ञानिक प्रभावों पर गहन अनुसंधान से पता चला है कि ओ३म् एक पवित्र, वैज्ञानिक व चिकित्सकीय शब्द है। यह कोई मूर्ति, प्रतिमा या मजहबी परम्परा का द्योतक नहीं है। संक्षेप में हम राष्ट्रवाद, अध्यात्मवाद व एक आदर्शवादी जीवन पद्धति में विश्वास रखते हैं। हम मजहबवाद, प्रान्तवाद के पोषक नहीं, हम राष्ट्रवाद, मानवतावाद व अध्यात्मवाद के पोषक हैं।

(3) आदर्शवाद

आदर्शवाद की सप्त-मर्यादाएँ

शाकाहारी, निर्व्यसनी, स्वस्थ, समर्थ, समर्पित व गैर–राजनैतिक जीवन तथा योग व राष्ट्रहित में प्रतिदिन कम से कम एक से दो घण्टे का समय देने के लिए प्रतिबद्धता, ये हमारी सप्तमर्यादाएं हैं, जिनका मुख्य सम्बन्ध हमारे वैयक्तिक जीवन व आचरण से है। यदि हमारे वैयक्तिक जीवन में शुचिता, सार्वभौमिकता एवं राष्ट्रीयता की प्राथमिकता नहीं होगी और यदि स्वयं ही स्वस्थ, समर्थ, समर्पित एवं राजनैतिक आग्रहों से रहित नहीं होंगे तो कैसे एक भ्रष्टाचार, अपराध एवं शोषण रहित शासन, समाज व राष्ट्र की संकल्पना पूरी कर पायेंगे। हमारे मुख्य योगशिक्षक, सहशिक्षक, उपशिक्षक एवं कार्यकर्त्ता योग साधक इन सप्त मर्यादाओं में रहकर प्रथम वैयक्तिक जीवन में पवित्रता, शालीनता व पारदर्शिता लायेंगे और फिर राष्ट्रीय–चरित्र के अभियान को आगे बढ़ाएंगे।

गैर–राजनैतिक जीवन से अभिप्राय है कि हमारा योग शिक्षक किसी राजनैतिक दल का प्रतिनिधित्व नहीं करेगा और न ही प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से किसी दल विशेष का सहयोग करेगा। हमारा राजनैतिक दर्शन है–सर्वदलीय व निर्दलीय अर्थात् सब दलों में जो चरित्रवान, पारदर्शी, पराक्रमी व राष्ट्रवादी लोग हैं उनको भावनात्मक समर्थन देना। याद रहे राष्ट्रवादी व ईमानदार राजनेताओं को भी प्रत्यक्ष समर्थन नहीं देना। पदेन अधिकारी या पार्टी के अभियान का हिस्सा नहीं बनना, जैसे मुख्यालय की ओर से हम राष्ट्रवादी व ईमानदार लोगों का सार्वजनिक रूप से नैतिक समर्थन करते हैं, इसी तरह हमारे शिक्षकों को भी चरित्रवान व राष्ट्रवादी राजनेताओं को भावनात्मक समर्थन देना है। सर्वदलीय या निर्दलीय होने का तात्पर्य है कि हमें किसी दल का समर्थन नहीं करना और न ही किसी दल या व्यक्ति विशेष का विरोध करना। हमारा विरोध किसी व्यक्ति या पार्टी से नहीं बल्कि हमारा विरोध सैद्धान्तिक है, और यही रहना चाहिए। किसी भी राजनैतिक पार्टी से प्रत्यक्ष पदेन जुड़ा हुआ व्यक्ति हमारा शिक्षक नहीं हो सकता। वह हमारा साधक, कार्यकर्त्ता व भारत स्वाभिमान आन्दोलन का सदस्य हो सकता है। हम किसी राजनैतिक पार्टी के प्रतिनिधि या प्रचारक नहीं हैं। हम राष्ट्रधर्म के प्रतिनिधि व प्रचारक हैं। यह हमें सदा स्मरण रखना चाहिए कि हमारा सम्पूर्ण व्यक्तित्व, हमारी वाणी, व्यवहार, खान–पान व आचरण ऋषि संस्कृति व योगपीठ की गरिमा के पूर्ण रूप से अनुकूल रहना चाहिए। ❑